भजन

तर्ज–टुकड़े हैं मेरे दिल के

बैठे हो जहाँ पर तुम तेरे पास तेरी रूहें
माशूक मेरे देखो क्यूं उदास तेरी रूहें

1– कदमों में पड़े हैं पर बातें न हो सकती हैं
आंखें तो खुली हैं पर दीदार को तरसी हैं
इस दर्द में घिर कर के लाचार तेरी रूहें

2– नजरों में पिया जी ये नजरें तो जरा डालो
दिल में यूं उतर करके दूरी तो मिटा डालो
मांगे तो फकत मांगे ये मेहर ही तेरी रूहें

3–कोई आस अगर है तो वो आस दर्श की है
कोई प्यास अगर है तो वो प्यास अर्श की है
करती है खताओं का इजहार तेरी रूहें